



श्रीगोशयमः॥ निश्चयस्यो न वेदे वि शिवशक्त्यो र्दे जेद तः॥ नृरा विंग
 नैयथा नैदं प्रजायते॥ अथ कमवी धि लिख्यते॥ तत्रादौ रुस्तपा दौ दैत धाव
 काल्या र्च्यम्॥ अथ नृशु धि नृतमु द्वि प्राणायाम प्राण प्रतिष्ठा मातृकां न
 दशविधि मातृका क्रु धिः क्रु द्यः कर शु धि षडा गाल्मर ना षडा सन न्यास
 नी न्यास षोडशानित्या न्यास षोडश न्यास नैव यो नि न्यास योगिनी न्यास तत्त्वं न
 आ यु ध न्यास गुरुस्मरणं कृत्वा मूला दिव प्र नृध प र्थं तं मूल विद्या वि ना
 तः॥ अं तां या न्या नाश्च इति किं चित्ते चार्यते॥ श्रीनाथसूत्रे निवृत्ति चरनं पर
 पावकं कुल कामगविः शुक्ल रत्नौ निष्कल रूपकौ सकलौ चतदात्मानं उपसारय
 दौ ततः॥ सहस्रदल ग्रा डी वं कर्णिकोदर मंडले गुरुं च गुरु पतिं च देवदे वि वि ना
 वरेत्॥ सीतरं ते च कु सु मे ख मू र्द्धि व म्रि र भु गे॥ स्वस्व मंत्रे य उ त्प श्रु त्प न

पचतुष्टयं निर्वृणु नृन ध्यान करनै कप्रायन पत्रादि मानवौ चान्ताः॥ इत्ये
 त्यरितं क्रमात्॥ वृंदादि हे म ग नृता धी वि ते कु ल नायिके॥ परेशा दि नै वेश
 ना कृता नृकम मादरात्॥ आत्मनो क्य म नृध्या त्पु जये दध सा ध कः॥ ॐ ॥
 काले स मु ष्याय सा ध क स्थिर मानसः॥ सशक्तिं कुरु शै यायां ॐ न्ये सि म्मि
 नै धे वा॥ श्रीमुखोदग मुखो वापि उपविश्य श्रु रवा सने॥
 तदोपरि रुरु स्य वित्तं चरण द्वयं नृतौ स्वे ष्या विग्रह धारि नौ॥ गुरु च गुरु
 पतिं च देवदे वि वि ना वरेत्॥ तद्यथा॥ ॐ ॥ अथ नृशु धि॥ य धि वा मे
 ष क्रु धिः सिरशि सुतलं क्रु दः मुखे कृ म्मो देवता रु दय लं वी र्णं गृह्ये द्वा शक्ति
 पादयो ह्यौ की लकं सर्वो गे मम सर्वा नी षु सि ध्य र्थे कु पे वि नियोगः॥ य धि
 या धृ तां लोका दे वि त्वं वि स्मृ ना धृ ता त्वं च धारय माने वि पवित्रं कुरु चाप

[illegible][illegible]

लडौं। सोमचक्र धूपगिरिपीठे षष्टिशनाथामिके ब्रह्मात्मशक्ति जगमासिने
वि. श्रीपादुकारे नमो ललाटे ॥ ३९ ॥ कौसौ ४ क ई ल डौं ह सक ह ल डौं सक ह
ब्रह्मरन्ध्रचक्रे वीड्या नथीठे चर्यानाथामिके श्रीमहाविपूर सुंदरीदेवि परमात्म
शक्ति ज्ञानाख्या नासा श्रीपादुकारे नमो ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ० ॥ योगिनी न्यास ॥ वं डौं
जीवं डौं डौं पकटयागिनी स्थानमक्षमूलाधार ॥ ३ वं डौं डौं गुफयागिनी ३ स्वा
धिस्थान ॥ ३ वं डौं डौं गुफगत्रयागिनी ३ नारा ॥ ३ वं डौं डौं संप्रदाययागिनी
३ रुद्रि ॥ ३ वं डौं डौं कलकोलयागिनी ३ कल ॥ ३ वं डौं डौं निरुगयागिनी ३ उ
माव्य ॥ ३ वं डौं डौं रुरुस्थयागिनी ३ नाद ॥ ३ वं डौं डौं जगत्तुल्ययागिनी ३ ना
दाने ॥ ३ वं डौं डौं पत्रापत्रयागिनी ३ स्थानमक्ष ॥ वं डौं डौं ॥ ० ॥ गत्व
न्यास ॥ वं डौं श्री वं क १०० ल डौं जगत्तुल्यव्यापिकार्ये श्रीमहाविपूरसुंद
री नमः ॥ ३ वं डौं डौं ह सक ह ल डौं विद्यातत्वव्यापिकार्ये श्रीमहाविपूरसु

[illegible]

लुफलाभकि ॥ १०॥ गुरुपुत्रसंदरी नेगु वयायधो मठ ॥ सकलजी सुन ॥
 सुभकि ॥ श्रीमद्विपुनसंदरी सर्वोद्वेगकायरुद ॥ १०॥ १०॥ व४ सुवरोमिति ॥
 व४ ॥ १०॥ गुरुसमरन कृत्वा ॥ ध्यान ॥ सरुसुदले येक दोशकलसीतुर सिधु-
 मावरा नयकर विडं विमलगंधयुष्यावरं पुरा निवदने दाणशकलदे वतासु
 नैसरेछिर सिहसर्गतदविधानयुर्वगुरु ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 हसो ॥ श्रीविद्यानदनाथदव श्रीदुग्गे म्वाधविसहो सरुदु श्रीदो वें ॥ श्रीपदु
 कांयु उ या मितययिमिनम ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 मसि ॥ मरु मसि वद्वारु मसि मरु मसि साहं स्वच्छ पुका सयनिपु ॥ १०॥
 नापुरपुरमर्हसुयनिपु ॥ निवो नानन्द नाथदव श्रीगिराम्वाधु विसहो
 सरुदु श्रीदो वें ॥ निवो नानन्द नाथदव श्रीगिराम्वाधु विसहो
 मलवत्रयदु हसकमलवत्रय ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 १०५

वगुत्रस्यं श्रीगुरुनाथं न हसकमलवत्रय ॥ न हसकमलवत्रय ॥ न हसकमलवत्रय ॥
 लवत्रय ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 सरुदु श्रीदो वें ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 भाषो वनदविश्वक न सून प्रो श्री ॥ सु सो ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 श्रीदो वें ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 धय ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 कासानन्दनाथदव ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 ग्रानक मदा मललत्रके ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 नका ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 १०५

[illegible]

नन्यनाथदत्त

[illegible]

[illegible]

स्वादवी अलुं श्री ॥ अलुं अ विष्णु सा नन्द नाथ दत्त विष्णी सीय वा स्वादवी अ
 लुं श्री ॥ अलुं अ दिनीष्ठ वा नन्द नाथ दत्त पावनी य वा स्वादवी अलुं श्री ॥
 अलुं अ सर्वेश्व वा नन्द नाथ दत्त सर्वेश्व वी य वा स्वादवी अलुं श्री ॥ अलुं अ
 ज्ञानन्दानन्द नाथ दत्त ज्ञानन्दी य वा स्वादवी अलुं श्री ॥ अलुं अ मयवा न
 न्द नाथ दत्त वा मागी गोप वा स्वादवी अलुं श्री ॥ अलुं अ वा मा नन्द नाथ दत्त
 वा मा यत्रा स्वादवी अलुं श्री ॥ अलुं अ श्री संक वा नन्द नाथ दत्त गंगेश्व वा न
 द वा अलुं श्री ॥ अलुं अ श्री निशानन्द नाथ दत्त श्री दुर्गा य वा दवी श्री सं
 श्री जीनेलुं श्री ॥ अलुं अ नृस्थान म॥ लेगन्धे वल्ये दाथं नृशवने च न
 म्मुखतया श्री भुवा गंधं समर्थ या मिते ॥ ५॥ इहं सद्यतल्ये दाथं

वन प्रत्यग्मुखं याही नु वायू र्थी न॥ १५ य स सर्व त्व दार्ध नर
प्रत्यग्मुखं याही नु वायू र्थी ७॥ ६ व नैव त्व दार्ध नर रुवन प्र
म मुखं याही नु वायू र्थी ९॥ ७ व न स व त्व दार्ध नर रुवन प्रत्यग्मु
न याही नु वा नैव र्थी १॥ ८ जी मृत्काने न क्लेश भयत्र त्सानये त्यग्मुख
न याही नु वा आचमनी र्थी १॥ ९ ने यत्र बुक्ता त्सानये त्यग्मुखं याही
नु वा गाम्बूल समर्प मि नमः ४॥ १० क क का व यु गा का यो शा का ६
शा उ यु गा रु डि । स्ना ना स्ना य पि ता स्ना ने, लम्भ त्र सि व ना य वा ॥ लि ले
पा रा वे ना वृ णि, ये त्का त्र य नि सं के व । गे लू व मे व डा नी न्य गू ध मा
क्ष मा दि ल द्वा ने ॥ पा न पु रु णि सा या नी सा या दि पा न री ता ४ य त्के

प्रामिउगं नाथ गद सु गव पू उ नै ॥ कार्य न मन सा व ध्या या गु स्व
प्रसू प्रफियु मया य ल्हा यन क म्म गद सु गव पू उ नै ॥ ॥ अथा
प्रलिङ्गना सहृदय सत्र लिङ्ग गाल मूल ललो ट द्वये षाठ सप्रिदिद
अद सदल द्वादसाक्षर मुष्क वा ८१ नी वाल मध्व दरु कु ० सहिते
कष्ट दे सं वि जाना है रंग त्वा ध्यै क ८१ कल दल गर्त वे लु नृ प न
मानि ॥ ॥ अथा श्री महा योगायणी मेनु स्मृतं समविशिष्ट सिद्धि भव्य
कामायणी चन्द्र मुख परम हं सादवगाहृदय हं वीजं रुद्र स
८१ कि पादया सा हं कि न क सर्वोद्गम मन्त्र दवगा सकल
मता सिद्धार्थ अऊ वा मय लि निवेदन अथ विनियोग

[illegible][illegible]

॥ अथ हस्तमाला निम्नला धारवक्रास्त्रिंशो गणविधयः सिंदूरवर्णय
 विधिर्विधिनकिं संहिताय मूलिकवाहनाय त्रयदमूरुय श्रीगण
 धियमयषट्सप्तानि अजयाजपनिवदयामिनमः स्वाहा ॥ सांगमय
 सवाहनाय सप्तकिं काय सप्तत्रिंशवाय सार्लकावाय सप्तपिवा
 वाय धीयुजिगाधमपिना ॥ १६ ॥ सांनकं उवाहा ॥ ॥ तद्विनि
 सगन्तु माहगल स्वाधिसुनवक्रा मागल्यधाय ॥ वरमय वल्लोके अ
 धाये क्रियमाता यत्रिचिग मूयधूं यद्वकुं यद्यथा नि ॥ नृमयवत्रद
 रुक्मं चोत्रकुं मूदुमाता ॥ कत्रयू गलसंवा उं विनयिदि स्वयानीम
 ॥ नृवधाय ॥ अस्याधीवक्रा मगल्य रुत्रसविः निनसि अत्रष्ट सुन्दः

[illegible]

षट्सहस्रानि त्रिंशन् नयीनवर्णयः विशापी सायलानि पणितल
यदे स्रवादा नयं श्रीवक्र नयट्सह संश्रुतया उर्यं निवेदयामि
नमः स्वाहा ॥ गद्यवि वि सगंडु मागेन मलियुन चक्र मागल्य धायन
दश हाना गणयक न्युगद लयंक ब्रह्म विष्टित ॥ गानां शुति श्री
दिष्टवृष मयं नावायन विगथन ॥ रु सा म्हा उ गद्या विष्टि ख विलस
स्या गो स नं को सु रं ॥ श्रीवत्सां किं न दान नूयु व किं नी ठा श्री न विवाकु
नाम ॥ नुर्व धा लोष दे गं दू यागि ॥ कु दाले य स्वाहा नीलव नय रु
दय ॥ मरुत्का य स्वाहा रु प्रवर्ण य सिन सि स्वाहा विवा ल्का य स्वा
विं हलव नय निखाय ववट् ॥ श्री ल्का य स्वाहा रु मव नय कव नय

[illegible]

[illegible]

यः प्राणी वायनमः ॥ नृकसर्वं, अथ यार्जयं निवेदयामि नमः ॥ साक्षात् ॥
दुःखनिवर्तिनं ॥ अथ यार्जयं निवेदयामि नमः ॥ साक्षात् ॥
कमले, यद्येता नृकावर्ज, विष्णोः श्री नमनं गेदह, निलयं, युखीव मात्मकं य
नरुथा गगनं दनिक ननं, रावेक सचित्परी यत्येका केन विग्रहं, गुनव
न ध्यायत्यत्र देवगं ॥ नव ध्याता आशु सदा निवर्मय, स्ववक्त्रा वि०
नियसि, गायत्री नृदः ॥ मश्व, श्री सदानिवादवगा, हृदय, श्री वीर्यं, गुह्यं
नकिं ॥ सदानिवागिको लेकं, मम सर्वशीघ्रं, सिद्धं अथ य विनियोगं गीता
मित्रादिषु यद्गुह्यं, नव हृदयादि ॥ आवनं नमः ॥ सत्त्वं ॥ यत्त्वं
वक्त्रा मन्त्रि, मन्त्रं यत्त्वं, मन्त्रं ॥ श्री ॥ मित्रं यत्त्वं, नव वक्त्रं, संकल्पं यत्त्वं
॥ अथ यत्त्वं यत्त्वं ॥ स्वर्गं यत्त्वं, मावत्त्वं, यदि मावत्त्वं, उक्त्वं

सुं सुं श्री श्रीने ॥ द्वादशमं निर्वो लवक स्मि ग श्री निर्वो लवक
नी निर्वो लवक मं अयं ग ॥ ८ ॥ सुं सुं श्री श्रीया रुम स्मि व मा रु
म स्मि य का ल व न ल श्री या दू का पू अ या मि फ प या मि न म ॥ ९
अ रुम स्मि व मा रुम स्मि वि म व व न ल श्री ॥ १० ॥ ४ सा रुं प्र का ल वि
म व मि ग व न ल श्री ॥ ११ ॥ ४ या रुम स्मि व मा रुम स्मि अ रुम स्मि व मा
रुम स्मि सा रुं स्व रु प्र का ल य वि पू ल्म नंद नाथ दे व निर्वो न व न ल
श्री ॥ १२ ॥ न व व न ल व यु व य स्व मू द्वि पू अ यं ग ॥ १३ ॥ व न ल व
गु द्वादशमं अ स्मि निर्वो ॥ अ न रुं व रु नं क यो ग ॥ १४ ॥ दि

दुखं सक न अ न नी श्री य ग न मृ गा यां क का रु किं क ल क
लि नी या प ग ना र्थि गा यां किं किं सो र्वां स न व न न र्थि प्रा प ग न र्थि
गा यां क कं या ग स्व यि वि वि न र्थि वि र्थि माल वि गा यां ॥ १५ ॥ अथ
व मा य ॥ सुं सुं श्री श्री रुं श्री पू ल्म व नी म रु ग म सा पू र्वा मा य श्री
वा स्व वि ॥ अथ द द्वि ल मा य श्री ॥ सुं सुं श्री सुं श्री क्री न म द द व रु
शा मि लि द द्वि ल मा य श्री ॥ सुं सुं क का अथ य ल्म मा मा य सुं सुं
श्री सुं श्री ४ न मा ग ग व नी सुं सुं क डि क सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं
कि नि कि नि कि नि कि नि सुं सुं सुं सुं श्री श्रीने ॥ प ल्मि मा मा प

[illegible]

१ क न डू
एणी नु न भू मि डू य गी ॥ वि न्द म (ध) र्दु ग्री मा दू गि प न्द सु न्द चि न्द
गा मि त्तो लो (गु) का भ व्द वि णी णा न्द ज्जो व ड्द ध्व वी णी णा न्द २ र गु मा
लि नी णी णा न्द २ नि ए वि न्द न्ना य न म धी णा न्द २ र न्दु मा यि न म धी णा न्द २ व
द्रि या नि न्द न म धी णा न्द २ नि व दू य न म धी णा न्द २ त्व वि ना य न म धी णा
न २ कू न्द स न्द धी न म धी णा न्द २ नि स्या य न म धी णा न्द २ नी ल प गु का य न म
धी णा न्द २ वि डू या य न म धी णा न्द २ स व्व मं ग ला य न म धी णा न्द २ द्वा ला स
लि न्द न म धी णा न्द २ वि णा य न म धी णा न्द २ नि वि का ण यू डा ४ म न्द २ डा डा
की वू स ४ या न्द लो वा न्द मं क म ध्व वी का म ध्व न ध्व न्द न म ४॥ स्व वा मं

[illegible]

५ यं विमलाम्बा (गुद वगा म्बा द विष्ठी शा गं ५ श्री अरु न्बा (गुद वगा
दर्विष्ठी शा गं ५ यं ५ श्री अयनिम्बा (गुद वगा म्बा द विष्ठी शा गं ५ श्री सर्वः
ध्वनी वा (गुद वगा म्बा द विष्ठी शा गं ५ श्री को लिनी वा (गुद व वगा म्बा
द विष्ठी शा गं ५ श्री संप्रयुक्त वसुका (ल ॥ दम्बा यग ४ शि का (ल ५ पूरा (ल
वखाण य विराय दि धो घान नाथ द वष्ठी शा सिद्धि घान द नाथ द वष्ठी
॥ मानो घान द नाथ द वष्ठी शा गं ५ यं ५ श्री अलि ॥ श्री संप्रयुक्त ॥ स्वनाम सुला पु
पु म्बा रुद य काम कली वृष ध्वा त्वा व उ व सा द दि ल वं दं वं यं स
सु कुं श्री ५ श्री ५ दि ५ ला क पा ल खान म ५ व उ व स का (ल ५ मि पि धन

[illegible]

५ सा ५५

दविष्ठी०॥५०॥ सर्वत्र का स्वातृ पिनी दवीष्ठी०॥५१॥ सर्वप्रिया ॥
 यदा दवीष्ठी०॥५२॥ सर्वं पूज्यं ॥ सवाहन न ग्यादि॥ ५३॥ सर्वार्थ सा
 धकत्र कायन मः॥ ५४॥ सर्वसिद्धि युदा दविष्ठी०॥५५॥ सर्वं सर्वं
 यदा दविष्ठी०॥५६॥ सर्वप्रियं कत्री दविष्ठी०॥५७॥ सर्वमङ्गल कालिना
 दवीष्ठी०॥५८॥ सर्वकाम यदा दविष्ठी०॥५९॥ सर्वदृष्ट विभातिनीः
 दविष्ठी०॥६०॥ सर्वमृत्यु यदा मनी दविष्ठी०॥६१॥ सर्वविघ्न निवा निनी
 दविष्ठी०॥६२॥ सर्वदुःख सन्दरी दवीष्ठी०॥६३॥ सर्वसौख्य दायिनी द
 विष्ठी०॥६४॥ सर्वं पूज्यं ॥ ॥५॥ सर्वसाक्षात् दायकत्र कायन मः॥
 साक्षात् दायिनी ॥

मयि न

५ अं सर्व संकारिणी गकिणी ॥ ५०० सर्वविदा विनी गकिणी ॥ ५
 ६ अं सर्वोत्कर्षणी गकिणी ॥ ५०१ सर्वज्ञादिनी गकिणी ॥ ५०२ सर्वसं
 ७ अं सर्वसंस्कारिणी गकिणी ॥ ५०३ सर्वदोहिनी
 ८ अं सर्ववर्णकरी गकिणी ॥ ५०४ सर्वरंजिनी गकि
 ९ अं सर्वोन्मादिनी गकिणी ॥ ५०५ सर्वार्थसाधिनी गकि
 १० अं सर्वसंपरिपूत्रिणी गकिणी ॥ ५०६ सर्वमनुसारी
 ११ अं सर्वलक्ष्मिणी गकिणी ॥ ५०७ निसंयुक्ता ॥ ५०८
 १२ अं नगकृष्णमादविनी ॥ ५०९ नगमसंरादविनी ॥ ५१०

नंगमदनाष्ट्रीणां नैऋतं अङ्गुलीयानां दक्षिणं २
अङ्गुलीयानां दक्षिणं अङ्गुलीयानां दक्षिणं २ अङ्गुलीयानां दक्षिणं २
अङ्गुलीयानां दक्षिणं अङ्गुलीयानां दक्षिणं २ अङ्गुलीयानां दक्षिणं २
अङ्गुलीयानां दक्षिणं अङ्गुलीयानां दक्षिणं २ अङ्गुलीयानां दक्षिणं २
अङ्गुलीयानां दक्षिणं अङ्गुलीयानां दक्षिणं २ अङ्गुलीयानां दक्षिणं २
अङ्गुलीयानां दक्षिणं अङ्गुलीयानां दक्षिणं २ अङ्गुलीयानां दक्षिणं २

शी०॥ने०२॥गं०॥क०॥ष०॥ली०॥शी०॥ने०२॥हं०॥वि०॥रु०॥क०॥ष०॥ली०॥शी०॥ने०२॥हं०॥
ध०॥या०॥क०॥ष०॥ली०॥शी०॥ने०२॥ने०॥स्म०॥रु०॥या०॥क०॥ष०॥ली०॥शी०॥ने०२॥ने०॥ना०॥मा०॥क०॥ष०॥
ली०॥शी०॥ने०२॥आ०॥वी०॥आ०॥क०॥ष०॥ली०॥शी०॥ने०२॥आ०॥ना०॥क०॥ष०॥ली०॥शी०॥ने०२॥
अ०॥या०॥वा०॥क०॥ष०॥ली०॥शी०॥ने०२॥अ०॥४॥स०॥नी०॥ला०॥क०॥ष०॥ली०॥शी०॥ने०२॥ना०॥गु०॥फ०॥या०॥
गि०॥न्या०॥स०॥भ०॥ग०॥वे०॥दि०॥क०॥द०॥र्ज०॥ना०॥गी०॥॥स०॥र्वो०॥सा०॥य०॥त्रि०॥पू०॥त्र०॥क०॥व०॥क०॥सा०॥मि०॥
नी०॥॥प्रि०॥यू०॥त्र०॥४०॥त्री०॥स०॥म०॥डा०॥४०॥स०॥सि०॥द्ध०॥य०॥४०॥सा०॥ं॥ग०॥म०॥य०॥सा०॥यू०॥छा०॥स०॥वा०॥रु०॥
ना०॥य०॥स०॥ग०॥कि०॥का०॥य०॥स०॥य०॥त्रि०॥वा०॥ता०॥य०॥सा०॥ल०॥का०॥ना०॥य०॥स०॥र्वो०॥व०॥वा०॥ने०॥
पू०॥ति०॥नो०॥स०॥ग०॥थि०॥ना०॥स०॥नु०॥॥॥ने०॥आ०॥शी०॥अ०॥डं०॥मं०॥अ०॥ष्टा०॥लि०॥ग०॥ले०॥का०॥

ना०॥य०॥प्रि०॥वृ०॥रु०॥म०॥नु०॥ला०॥य०॥न०॥म०॥४०॥अ०॥थ०॥व०॥रु०॥त्र०॥य०॥पू०॥आ०॥॥॥अ०॥
सा०॥या०॥॥य०॥स्त्रि०॥म०॥ने०२॥स०॥र्व०॥सं०॥का०॥रि०॥ना०॥म०॥डा०॥शी०॥ना०॥ड०॥रु०॥त्र०॥३०॥स०॥र्व०॥वि०॥
वि०॥ना०॥म०॥डा०॥॥यू०॥र्व०॥३०॥स०॥र्वो०॥क०॥ष०॥ली०॥म०॥डा०॥शी०॥ना०॥द०॥दि०॥ल०॥३०॥स०॥र्व०॥व०॥र्ज०॥क०॥त्री०॥
म०॥डा०॥शी०॥ना०॥आ०॥ष्टा०॥३०॥स०॥र्वो०॥ना०॥दि०॥नी०॥म०॥डा०॥शी०॥ने०॥स०॥रु०॥३०॥स०॥र्वो०॥म०॥हो०॥क०॥
॥म०॥डा०॥शी०॥ना०॥वा०॥यू०॥र्व०॥३०॥ख०॥व०॥त्री०॥म०॥डा०॥॥॥शी०॥ना०॥न०॥३०॥स०॥र्व०॥वी०॥आ०॥म०॥डा०॥शी०॥
ना०॥अ०॥ध०॥४०॥३०॥या०॥नि०॥म०॥डा०॥शी०॥ना०॥ड०॥डु०॥३०॥प्रि०॥ख०॥नु०॥म०॥डा०॥शी०॥॥म०॥ध०॥व०॥खा०॥
३०॥व०॥र्ज०॥की०॥शी०॥॥३०॥मा०॥ह०॥रु०॥व०॥त्री०॥शी०॥॥३०॥को०॥मा०॥त्री०॥नी०॥शी०॥॥३०॥वा०॥ला०॥हो०॥शी०॥॥
३०॥ने०॥दु०॥या०॥ली०॥शी०॥॥३०॥वा०॥म०॥नु०॥शी०॥॥३०॥म०॥हो०॥ल०॥क्षी०॥शी०॥॥अ०॥थ०॥व०॥दि०॥

ल स्वायी ॥ ३ अ नि मा सि धि धी ॥ ३ ल धि मा सि धि धी ॥ ३ म हि मा सि
धि धी ॥ ३ ॐ शि त्व सि धि धी ॥ ३ व शि त्व सि धि धी ॥ ३ वा का म सि धि
धी ॥ ३ कु सि धि धी ॥ ३ ॐ का सि धि धी ॥ ३ व सु त्र सि धि धी ॥
॥ ३ मा दू सि धि धी ॥ न गाय क ट यानी न्या वो द्ध द र्श ना डी (उ) ला
क मा रु न व क्ख सा मि नी गि य् सां (ह) र्वा दि ॥ व क्ख से वा य् का (न)
॥ ३ ग न य ग न म ॥ ३ ॐ भ न द र्श याल का य धी ॥ आ (न) ३ वा गी (द)
वा य धी ॥ ३ ॐ स ख व दू का य धी ॥ ३ ॐ डाय धी ॥ आ (न) य धी ॥ ३ द
मा य धी ॥ ३ ने स ग धी ॥ ३ व नू ल य धी ॥ ३ वा य व धी ॥ ३ क व

धी ॥ ३ नि वा य धी ॥ ३ ॐ भ न द र्श याल का य धी ॥ ३ अ न ना य धी ॥
य नि म या म ध्व ३ व क्ख ल धी ॥ ३ व दू यि धी ॥ ३ आ (न) ग क य न म
धी ॥ द द्दि द धु य न म धी ॥ ३ ने स ख र व शाय न म धी ॥ ३ य नि म या
धाय न म धी ॥ वा य क ३ अ क्ख धाय न म धी ॥ उ रु त्र ग दाय न म धी ॥
॥ ३ ॐ भ न द र्श याल का य न म धी ॥ ३ अ व व का य न म धी ॥ ३ उ दू व द्ध
य न म धी ॥ ॥ ग न्ध पू ष्प धू प दी प ने व द्ध द ल्का य थ क्ख उ
पि ल धी पु त्र द व गा ये नि व द्ध ॥ सा ग ॥ अ ज्ञान ना र्णा दि सा ग ॥
॥ ३ ने डी धी सि य ना य वि द्ध रु क्की का मि ध्व वी धी म ही सो ष म ना न

दुष्टवाद्ययाग ॥ ॥ अथ श्रीवक्राचनसंस्कृतलिखित ॥ नैर्दो
द्योते लाकभादनेनामं वडु वधुनमकधीपिष्टुवावकुनायेकाधिः
ष्टिर्न अनिमाया ॥ युक्तयागिन्यासमर्गसमूहा ॥ सुसिद्धय ॥ सुवा
दनाय सायुजा ॥ सयलितवासासर्वकोवा ॥ सर्वोयवावेस्युडिनासं
नयिगासन्नु ॥ मूडा ॥ १ ॥ ने २ सर्वसायलियुवकनामसायुजा
त्मकवक्रधीपिष्टुवक्रनायिकाधिष्टिर्न कामाकर्षणाय ॥
तिष्ठिनिष्ठा ॥ युक्तयागिन्यासमर्गसमूहा ॥ २ ॥ ने ३ स
र्वसंसारननामअष्टदलात्मकवक्रधीपिष्टुवक्रनायिका

काधिष्टिर्न अनं गक्रसमाया ॥ युक्तयागिन्यासमर्गसम
दि ॥ ३ ॥ ने २ सर्वसायलियुवकनामसायुजा ॥ तवात्मकवक्रधीपि
वाशिनीवक्रनायिकाधिष्टिर्न सर्वसंसारिणाय ॥ संपुदायया
न्यासमर्गसमूहा ॥ ४ ॥ ने २ सर्वार्थसाधकनामदुर्गाकात्म
कवक्रधियुवावकुनायिकाधिष्टिर्न सर्वसिद्धिपदकलकोलयागि
न्यासमर्गसमूहा ॥ ५ ॥ ने २ सर्ववक्राकर्षणनामअनन्ददुर्गाकात्म
कवक्रधीपिष्टुवक्रनायिकाधिष्टिर्न सर्वज्ञाया ॥ नि
गत्यागिन्यासमर्गसमूहा ॥ ६ ॥ ने २ सर्ववागद्वयनाम

अष्टात्रचक्रात्मिक शीघ्रिपूरासिद्धाचक्रनायिका धिष्ठिगन्तव्यनिन्याद्य
 वरुस्ययागिन्यासमर्गं समुद्रादिसिद्धादि ॥ १ ॥ त्रैलोक्यकालद्विवा म
 दक्षिणयाग्युत्तान्युत्तयन ॥ त्रैलोक्यकामध्वनी धनधनमष्टापाद ॥ वा
 माधकन ॥ त्रैलोक्यकामध्वनी पाददक्षिणामधकन ॥ उपासायनमष्टा
 पा ॥ वामाधकन ॥ उपश्रुयात्मयनमष्टापाद ॥ दक्षिणामधकन ॥ त्रैलोक्य
 सर्वसिद्धिपदायकं नाम त्रिकालात्मकवक्र शीघ्रिपूरासिद्धाचक्रना
 यिका धिष्ठिगन्तव्यनिन्यासमर्गं समुद्रादिसिद्धादि ॥ ८ ॥ त्रैलोक्यसर्वानन्दमयं नाम सर्वानन्दनामकवक्र शीघ्रिपूरासिद्धाचक्रना

३

नदीशीघ्रचक्रनायिका धिष्ठिगन्तव्यनिन्यासमर्गं समुद्रादिसिद्धादि ॥ १ ॥ त्रैलोक्यकालद्विवा म
 वरुस्ययागिन्यासमर्गं समुद्रादिसिद्धादि ॥ १ ॥ त्रैलोक्यकामध्वनी धनधनमष्टापाद ॥ वा
 माधकन ॥ त्रैलोक्यकामध्वनी पाददक्षिणामधकन ॥ उपासायनमष्टा
 पा ॥ वामाधकन ॥ उपश्रुयात्मयनमष्टापाद ॥ दक्षिणामधकन ॥ त्रैलोक्य
 सर्वसिद्धिपदायकं नाम त्रिकालात्मकवक्र शीघ्रिपूरासिद्धाचक्रना
 यिका धिष्ठिगन्तव्यनिन्यासमर्गं समुद्रादिसिद्धादि ॥ ८ ॥ त्रैलोक्यसर्वानन्दमयं नाम सर्वानन्दनामकवक्र शीघ्रिपूरासिद्धाचक्रना









